शनिवार

Accurate
Date 27/1/18 Page

तगादा / भुगतान पत्र

परिभाषा :

इन पत्रों को तगादा पत्र भी कहा जाता है जब किसी कारण वंश निर्धारित राशि को नह समय पर नहीं दिया जा सके तब उसके संग्रह में जो पत्र लिखे जाते है वे भुगतान पत्र कहे जाते है।

इन पत्रों को लिखते समय भाषा की सावधानी पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन पत्रों को सबसे अधिक समवेदनशील माना जाता है।

पत्र क्रमांक 28/27/08

एम. जी. रोड
108 पुणा (महाराष्ट्र)
20 जुन 2000

प्रबंधक :
भावना एम्पोरियम,
रमन नगर,
धारवाड (मैसूर)

महोदय,

हम आपका ध्यान 10 जनवरी 2000 को भेजे गये। लेखा विवरण कि ओर आकर्षित करना चाहते है। जिसके अनुसार हमारे बीजक संख्या 414 का भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है। हो सकता है। आप किसी कारण वश भुल गये हो। इसलिए हम लेखा विवरण की प्रतिलिपी साथ भेज रहे है। कृपया शीघ्र भुगतान करने की कृपा करें।

धन्यवाद,

भवदीय
कमल

सोमवार

Accurate Date 29/1/18 Page

बीमा पत्र

परिभाषा :
व्यापारिक अपने व्यापार को किसी भी जोखिम से बचाने के लिए जिस उपाय का प्रयोग करते है उसे बीमा कहते है, तथा जिन पत्रों के माध्यम से बीमा योजना की जाती है, उन पत्रों को बीमा पत्र कहा जाता है।

बीमा तीन प्रकार का होता है।
* जीवन बीमा
* समुद्री बीमा
* अग्नि व चोरी सम्बन्धी बिमा

आलोक एण्ड सन्स
(कपडे का व्यापार)

108, एम. जी. रोड
पुणा महाराष्ट्र
20 जून 2000

पत्रक्रमांक :- 28/27/107

प्रबंधक,
जनरल इन्श्योरेन्स सोसायटी लिमिटेड
बैंगलूर - 27.

महोदय,
हम अपनी दुकान का एक वर्ष के लिए अग्नि बिमा करवाना चाहते है। बिमा पाँच लाख रूपये के लिए होगा। हमारी दुकान पक्की ईटों की बनी है। खिडकी और दरवाजे इस्पात के बने है। पाँच लाख से छः लाख रूपये का सामान हमेशा दुकान में रहता है।
कृपया अपनी बिमा दरें और शर्ते भेजने का कष्ट करें।

भवदीय,

कमल

रेलवे विभाग को शिकायती पत्र

प्रभाकर जनरल स्टोर
प्रसाधन सामान के विक्रेता

पत्रांक 28/27/स

108 एम. जी. रोड
पुना महाराष्ट्र
20 जून 2000

डिविजनल सुपरिटेन्डेन्ट
पश्चिम रेलवे
नई दिल्ली - 2

महोदय,

हमने कल रात 12 मई 2008 को दिल्ली स्टेशन से श्रीप्रेम कुमार द्वारा भेजे गये आमों की तीन पेटियाँ बिल्टी संख्या 2480 प्राप्त की इसमें से एक पेटी खुली अवस्था में मीली है। यह बात हमने दिल्ली रेल्वे स्टेशन के अधिकारीयों के समक्ष बिल्टी पर भी लिख दी है

इन आमों का बिजक साथ मे भेज रहे है। इनसे आपको मालूम होगा कि एक पेटी की किमत 1200 रु है। आपसे अनुरोध है कि हमारी इस हानी का शिघ्र भुगतान करे

सधन्यवाद,

भवदीय
कमल

Scanned by CamScanner

Accurate
Date ______ Page ______

बिहारी के दोहे

- बिहारी

एक वाक्य मे उत्तर दो :-

1. कवि ?
बिहारी

2. प्यासे की प्यास बुझाने वाला किसके समान है?
सागर

3. बिहारी के अनुसार कैसे चित्त की गति कोई नही समझता ?
अनुरागी

4. कवि के अनुसार काले रंग मे डूबकर मन कैसा हो जाता है?
सफेद

5. गोपी के अनुसार संसार मे किसका प्रतिबिंबितु (परछाई) दिखाई देता है ?
भगवान कृष्ण

6. किसके बिना बड़ा बनना संभव नही है?
गुण

7. किससे गहना बनाया नही जा सकता ?
कनक (धतूरा)

8. किनके कारण बृंदावन मे प्रयाग बन गया है ?
हरी राधिका

Scanned by CamScanner

Accurate
Date ______ Page ______

रचनाएँ :-
1. बिहारी सतसई
केवल एक ही रचना है जिसमे 702 दोहों को रचना गया है।

सारांश :-
बिहारीजी कहते है कि जिस प्रकार प्यास लगने पर जिसका पानी मिल जाए उसकी महिमा सागर के समान होती है। फिर चाहे वह पानी बहुत बड़ी नदी का हो या बहुत गहरे कुए का या फिर निचले बावडी का।
"प्यार मे डूबे हुए मन की स्थिति कोई नही समझ सकता" ऐसा एक गोपी दूसरी गोपी से कह रही है। क्योंकि काले रंग के संपर्क मे आने से वस्तुएँ भी काली हो जाती है परंतु श्याम से प्रेम मे डूबकर हमारा मन काला नही बल्की दिन प्रतिदिन उज्वल होता जा रहा है। यानि हम हर दिन पवित्र होते जा रहे है। एक गोपी दूसरी से कहती है कि मन मोहक कृष्ण की छवी (चित्र) मन मे बसाने से एक अदभुत अनुभव मिलता है। कि भले ही वे हमारे मन मे रहते हो परंतु उनका प्रतिबिंब पूरे संसार मे दिखाई देता है।
बिहारिजी कहते है कि बिना गुणों के इनसान कभी भी ना सफल हो सकता है। और ना ही बड़ा बन सकता है। जैसे धतूरे को कनक कह देने से वह सोना नही बन सकता और ना ही उससे गहने बनाए जा सकते है।
~~बृंदा~~ बृंदावन मे गोपियों का मानना है कि भगवान कृष्ण, राधिका तथा बृंदावन की गलियों की चमक आपस मे मिलकर एक विशेष संगम बना देती है। जब भी वे खेलते

Scanned by CamScanner

हुए रास्तों से गुजरते हैं तो अदभुत ग्रह विश बन जाता है। इसलिए अब पापों को नष्ट करने के लिए प्रयाग जाना अनिवार्य नहीं है क्योंकि स्वय भगवान और शक्ति हमें मोक्ष देने के लिए यहां मौजूद है।

ईश्वर से बिन्नति करते हुए भक्त कहते है कि हे प्रभु आपने कई पापों को मोक्ष दिया है इसलिए मुझे भी मुक्ति प्रधान करे और अगर मुझे बंधन मे ही रखना चाहते है तो अपने ही भक्ती मे बाँधकर रखिए।

संसार रुपि समुद्र से सागर पार जाना है तो केवल एक ही उपाय है कि हरि (भगवान) के नाम को बनाए जाए तथा उनकी जपकी माला ही हमारी पथवार हो।

बिहारीजी वसंत रितु के बारे मे बताते हुए कहते है कि पतझड़ मौसम के बाद भी वसंत का आगमन होता है। क्योंकि आपत्र हुए बिना नए पत्ते, फूल और फल नही मिल सकते।

कवि कहते है कि कोई भी वस्तु और इंसान सुंदर और बदसूरत नही होता। क्योंकि समय समय पर लोगो की रुची बदल जाती है तथा अलग अलग लोग एक जैसी पसंद नही रखते इसलिए जिसकी रुची जैसी है उसको वैसी भाती है।

जिस प्रकार नल को पाईप पर अगर पर्वत के ऊपर भी लगा दिया जाए तब भी जल की दिशा नीचे की तरफ ही होगी। ऊँचा नल खोलने के कारण पानी नीचे से ऊपर की ओर नही बह सकता। ठीक इसी प्रकार जो नीच प्रकृति की लोग है उनके साथ

अच्छा व्यवहार करने से उनमे बदलाव नहीं हो।

विशेषताएँ :-

1. इसकी शैली दोहा (काव्य) है।
2. बिहारी के दोहे मे अवधि शब्द अधिक है।
3. इसका रस शांत रस है।
4. शब्द शक्ति अभिधा है।
5. शब्द गुण प्रासाद और माधुर्य है।
6. इसमे अलंकार अनुप्रास है।
7. सामाजिक चेतवनी इन दोहो के माध्यम से कवि देना चाहते है।

Scanned by CamScanner

बुद्धदेव

रामधारी सिंह दिनकर

1. कवि का नाम?
उ रामधारी सिंह दिनकर

2. कवि के अनुसार विश्व चेतना कहा होती है?
उ करुणा अंतर में

3. बुद्धदेव के स्वर में क्या झंकृत हुआ?
उ युगधर्म

4. भगवान बुद्ध ने किसका त्याग किया?
उ मुकुट का

5. विश्व की महामुक्ति की ओर कौन चल पड़ा था?
उ बुद्ध

6. किसने स्थान की धूल बुद्ध के चरण छूना चाहती थी
उ वैशाली

7. खीर लेकर बुद्ध को कौन खोजता था?
उ सुजाता

8. गरल की वर्षा कहा हो रही है?
उ सभ्यता के आंगन में

9. किसे पूजा का अधिकार नहीं है?
उ दीन - दु:खी

10. विश्राम किसे कहा गया है.
उ ध्यान

Scanned by CamScanner

[इस कविता में कवि ने बुद्ध को युग चेतना माना है जिस प्रकार अपने समय में सिद्धार्थ विश्व चेतना के लिए व्याकुल हो उठे थे। उन्होंने सारे सुखों को त्याग कर वैराग्य अपना लिया था, सारे रिश्ते तोड़ कर विश्व को बुद्ध महासुमती दिखाने के लिए तपस्या की आग में खुद को डाल दिया था। तथा समस्त कठिनाइयों का विष पिकर विश्व को अमृत दिया था, ऐसे बुद्ध की भारत को एक बार जरूरत है।]

हालांकि बुद्ध को किसी वैभव की कमी नहीं थी। उनकी तपस्या के कारण जंगल भी पुष्पों से भर जाते थे। आज वही बोधिवृक्ष, कोयल और पक्षी एक बार फिर उन्हें बुला रहे हैं। शस्त्र के भार से धरती दब रही है। और मानवता जंजीर से जपती है, समय कहे जाने वाले भारत के आंगन में अत्याचार की शिक्षा हो रही है। मनुष्य का मनुष्य से नफरत का रिश्ता है। तथा भगवान को लोगों ने कपट, अहंकार और छल में बांध दिया है। गरीबों को पूजा का अधिकार नहीं है। धन पिशाच के कब्जा में दबाया हुआ है। धर्म की पवित्र ज्योति अब दिखायी नहीं देती। मानव मानव को (अछूत) अस्पृश्य मानने लगा है। गरीब भगवान के मंदिर में अपने लिए पट बन्द देखकर वापस लौट जाते हैं।

हे! प्रभु आज के राम को शबरी की भक्ति दिखाई नहीं देती भगवान का करुणा नियम जो केवल भक्तों की भलाई के लिए था। आज नहीं है। गरीब के आँसुओं में नहाकर क्या भगवान नारायण कहलायेंगे? अत्याचारी

Wednesday

21/3/18

उनको प्रणाम

- नागार्जुन

1. उनको प्रणाम कविता के कवि कौन है?
उ नागार्जुन

2. किनके तूणीर कैसे हो गये?
उ रिक्त

3. तीरों को क्या किया गया?
उ अभिमंत्रित

4. छोटी सी नैया से क्या पार करना चाहते हैं?
उ उदधि

5. कुछ लोगों ने कैसी समाधि ले ली?
उ हिम समाधि

6. भू-परिक्रमा के लिए लोग कैसे निकले?
उ एकाकी या अकिंचन

7. अनेक दाव के चलते लोग कैसे हो गये?
उ पंगु

8. दुनिया किसे भूल गयी?
उ फांसी पर चढ़ने वालों को

9. किसके जीवन का दुखांत हुआ?
उ उग्र साधक

10. कुछ लोग किसका उदाहरण थे?
उ दुर्दम साहस

Scanned by CamScanner

Accurate
Date ______ Page ______

अतुलनीय सेवाएँ देने वाले किसके दूर रहे?
उ. विज्ञापन

II कवि परिचय

नागार्जुन का जन्म 1911 में हुआ। इनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र है। ये प्रगतिशील कवि है। अति सामान्य जीवन जीने के कारण लोग इन्हें नागार्जुन बाबा के नाम से पुकारते है। ये अनेक भाषाओं को जानते थे।

रचनाएँ :-
1. सतरंगे पंखों वाली
2. हजार बाहों वाली
3. रतिनाथ की चाची

सारांश :- हर स्थिति में धैर्य का साथ रखना चाहिए यह बताते हुए कवि कहते है। कि वे लोग जिन्होंने काम पूर्ण किये तथा वे जो नहीं कर सके और जिन्होंने कोशिश करने से पहले ही हार मान ली उन सब को वे प्रणाम करके स्वीकार करते है।

वे जो जीवन में प्यार मन की बात मन में ही रखकर कम साधनों के साथ संसार रूपी समुद्र को पार करने का साहस कर सके परन्तु लड़ते - लड़ते ही मिट गये। उन्हें प्रणाम करते है।

कहीं जो सफलताओं के शिखर पर चढ़े परन्तु स्थिर नहीं रह सके तथा कहीं असफल होकर फिर मैदान में आ पहुँचे कवि उन को भी परिणाम करते है।

धरती की परिक्रमा के लिए अकेले और गरीब जिन्होंने साहस किया परन्तु जीवन की सच्चाई ने उन्हें पंगु

Scanned by CamScanner

Friday

Accurate

Date ______ Page ______

महेन्द्र भटनागर

बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे

1. बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे कविता के कवि कौन है?
उ महेन्द्र भटनागर ।

2. कवि के अनुसार कौनसा झंडा कभी नहीं झुकेगा?
उ शांति का ।

3. इतिहास के आरंभ से भारतीय किसमें विश्वास रखते है?
उ इन्सानियत ।

4. कवि के अनुसार पाप क्या है?
उ किसी को सताना ।

5. भारतीयों के पास कौनसा संदेश है?
उ विश्व मैत्री ।

6. घायलों और औरतों को किस से बचायेंगे?
उ क्रूर पंजों से।

7. कवि के अनुसार किसी की हँसी प्यारी है?
उ बच्चों की।

8. खून के छींटे किस पर नहीं पड़ने देंगे?
उ हँसी पर ।

9. किस पर बिजलियाँ नहीं गिरने देंगे?
उ कृषाण के मासूम सपनों पर

10. बिजलियाँ नहीं गिरने देंगे कविता कौन से काव्यसंकलन से ली गयी है?

जीवन भूमि का युद्ध

1. जीवन भूमि का युद्ध कविता किसने लिखी है?
उ रामनिवास 'मानव'

2 कवि ने विश्व को क्या माना है?
उ युद्ध भूमि

3. आदमी की रगों में क्या छिपा हुआ रहता है?
उ आग शक्ति

4. मनुष्य अपनी शक्ति से कहा तक उठ सकता है?
उ देवत्व तक

5. मानव विरक्त कब हो जाता है?
उ आसक्त होने पर

6. आसक्ति और विरक्ती के बिच किसका जन्म होता है
उ भगवत गीता ।

7. कौन हमेशा हारता है।
उ कायर

8. अंत: में किसकी जीत होती है?
उ लड़ने वाले की।

प्र कवि परिचय :-

रामनिवास 'मानव' का जन्म 1954 में हरियाणा में हुआ। आपने पी. एच. डी. तथा डी. लिट की उपाधि प्राप्त की आरम्भ से ही

Scanned by CamScanner

Accurate

आप हिन्दी साहित्य में अपना योगदान दे रहे हैं।

रचनाएँ :

1. बोलो मेरे राम
2. हम सब हिन्दुस्तानी
3. इतिहास गवाह है
4. वन्दना के शब्द

सारांश :

जीवन के संघर्ष के बारे में कवि कहते हैं कि इंसान जन्म से लेकर मृत्यु तक जो समय पूरा करता है, उसे जीवन कहते हैं और यह जीवन ही इस संसार में युद्ध के समान है। हर मनुष्य इस युद्ध में योद्धा के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। असत्य, अनीति, अधर्म, अहंकार, आलस और अनास्था वह लड़ता है।

मानव में असीम बल है उसका सही प्रयोग से धरती ही नहीं बल्कि आकाश विशाल बना सकता है। इंसान के रूप में देवता की ऊँचाई तक उसे पहुँचा सकता है।

कई बार इस लड़ाई में संसार के आकर्षण के मोह जन्म लेते हैं वह अपने पथ से भटकता भी है, परन्तु स्थिती का ज्ञान होते ही वह सच को समझ पाता है। जिस तरह अर्जुन का कृष्ण ने भगवत गीता का ज्ञान देकर रास्ता दिखाया था।

कई बार युद्ध दिखाई नहीं देते क्यों की यह सजीव नहीं बल्कि दिल और दिमाग में चल रहे होते हैं। लेकिन सच यह है कि हार उसी की होती है।

Accurate

Date ______ Page ______

कवितावली

: तुलसीदास

1. कवितावली के लेखक कौन है?
उ तुलसीदास

2. तुलसीदास के अनुसार जीवन का सार क्या है?
उ राम प्रेम

3. स्वर्ग और धरती पर कौन सहायक है?
उ राम

4. संसार की नदी में यम यावना कौन देता है?
उ जलचर

5. संसाररूपी नदी की धारा कैसी है?
उ भयानक

6. कवि प्रभुराम के साथ किस प्रकार की तरह रहना चाहते है
उ हनुमान की तरह

7. तुलसी के अनुसार दुःख कौन हरता है?
उ रघुनाथ

8. कवि मरने के बाद भी किसकी गति चाहते हैं?
उ राम की

II कवि परिचय :

तुलसीदास का जन्म 1532 और मृत्यु 1623 ये हिन्दी साहित्य में भक्ति काल के कवि माने जाते है। इनका विवाह रत्नावली से हुआ था ऐसा माना जाता है कि रत्नावली के उपदेश के कारण

Scanned by CamScanner

ही इन्होंने वैराग्य लिया था। ये राम के भक्त थे।

रचनाएँ :-

1. रामचरित्र मानस
2. कवितावली
3. विनय पत्रिका
4. जानकी मंगल

सारांश :-

"राम प्रेम की सार है" इस पद मे तुलसीदास जी भक्त और भगवान के सम्बन्धों के बारे में चर्चा करते हुए विनती करते है की हे प्रभु! चाहे जंगल हो या पर्वत चाहे मेरे आस - पास जल हो या आँधि या फिर चारों और विषैला वातावरण मुझे घेरे चाहे रोग ने घेरा हो या अनेक हैसे करोड़ों संकट शत्रु बनकर मुझे घेरे हो और सहायता के लिए न माता - पिता ना बेटा ना मित्र और ना ही मेरा भला चाहने वाले हो तब भी प्रभु राम आप मेरे साथ रहना। जिस प्रकार आप श्री हनुमान को सदा साथ रखते है। ठीक वैसे ही मुझे अपनी सेवा का अवसर दिजिए

(2) यह संसार एक भयंकर नदी के समान है। और एक से दुसरे किनारे पर जाना आसान नहीं है क्यों की इस नदी का जलप्रभाव तुफानी है और नाव को खेना आसान नहीं है। साथ ही बिच - बीच में भयानक जलजीव है जो अपने तेज धार वाले दांतों से यमराज की यातना देने के लिए हमेशा तैयार है। इस नदी की यात्रा को अकेले ही पार करना है। क्यों की जो जीवन

नारी

ः महादेवी वर्मा

1. नारी कविता किसने लिखी है।
उ महादेवी वर्मा

2. किसका नारी सुन्दर माना गया है?
उ अप्सरा।

3. किसु - किण स्वर कहा सुनाई देता है?
उ मेघो में

4. अवतेश लेकिन किसी
उ रवि - शशि

5. अप्सरा की मुस्कान किसके समान है?
उ इन्द्रधनुष

6. अप्सरा की सवीनता किसके समान है?
उ पावस (बारिश)

7. अप्सरा क्या बिखराती जाती है?
उ साहस

8. मधु मिलन किसे कहा गया है?
उ सृष्टी प्रलय

कवि परिचय ः-
महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश (फ
में हुआ। इनके परिवार का वातावरण साहित्यक था।
उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में कार्य किया। इनकी
मृत्यु 1978 में हुई। महादेवी जी को छायावादी

Scanned by CamScanner

कवियत्री माना जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को रहस्यवाद कि विचार धारा दी है।

रचनाएँ :-

1. निहार
2. रश्मी
3. नीरजा
4. अतित के चलचित्र
5. पथ के साथी

अप्सरा के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के मिलन का वर्णन करते हुए। महादेवी जी कहती है, कि हे! अप्सरा तुम्हारें नृत्य का सौंदर्य सबसे अलौकिक है। इसकी लय, गति, ताल, सुर और मुद्रायें सबसे अधिक लुभावनी है। जिस प्रकार कलाकार मंच पर नाचते समय प्रकाश और छाया मुस्कान और अभिनय का प्रयोग करता है तुम्हारे नृत्य में यह और भी सुन्दर मालूम होता है। बादलों के बिच पायल के स्वर और बालों की लटें उड़ती हुई आँधियों के समान मुख को ढक लेती है तब तुम्हारा नृत्य और भी सुन्दर हो जाता है।

ऐसा लगता है कि सुर्य - चन्द्रमा तुम्हारे आभूषण और आसमान के तारें तुम्हारें वेस मे जड़े है। तुम्हारी भुजाएँ कलाईं चमचम बिजली की तरह और मुस्कान इन्द्रधनुष की तरह लगती है। नृत्य के थकान से जो पसीने की बुन्दे झड़ रही है। लगता है कि प्रकृति छोटे - छोटे हिम कण बरसा रही है।

तुम्हारे नृत्य में कैसे समय कट जाता है। लगता है मानो एक युग पलक झपकते ही बीत गया। हर धड़कन में एक नया जीवन तुम्हें देखकर मिलता है।

तुम्हारे साथ - साथ पूरा संसार जीवित को मानो निर्जीव सभी जीवित होकर नाचने लगते हैं। हे अप्सरा तुम्हारा नृत्य अत्यन्त सुन्दर है।

तुम्हें सुनना हर हृदय को मधुर बनाता है तथा तुम्हारे समीप आने की चाह व्यक्ति की रुचि बन जाती है। तुम्हारे अनुपम रूप को छूने की इच्छा निर्जीव को भी अमर बना देता है। अप्सरा तुम्हारा नृत्य अत्यन्त सुन्दर है।

जहाँ भी तुम्हारी उपस्थित होती है। आस पास सारा जीवन खुशी से झूम उठता है। तथा तुम्हारी उपस्थिती वातावरण को मदमस्त बना देती है। मानो तुम सब कोलाहलों को पी लेती हो इसलिए पूरी प्रकृति तुम्हारे साथ झूम उठती है।

तुम्हारा होना ही हर एक के लिए साहस है, प्यार है, खुशी है और खुशी में डूब जाना है। सारी प्रकृति तुम्हारे लिए निवाह होने के लिए तैयार है। और स्वयं को मिटाने के लिए तैयार है। तुम्हारा नर्तन बहुत ही सुन्दर है।

तुमसे मिलना ही संसार को सृष्टी और प्रलय के निर्माता से मिलना है। इस मिलन से सीमित और असीमित का बंधन खत्म हो जाता है। तुम्हारे बारे में कोई सच नहीं कह सका तुम वह रहस्यमय अप्सरा हो।

जितने भी प्राणों के दीप जलते दिखाई देते हैं, वे सभी तुम्हारे लिए ही जी रहे हैं। प्रकृति की हर सुबह, हर फूल और सुन्दरता

हे श्यामांगि अप्सरा तुम्हारे ही कलाओं के हेतु ही तुम्हारी राहों में यह प्रकाति तुमसे प्रेम होने के कारण हर दिन मिलती है और सुन्दर होती जाती है। क्यों की तुमसे प्रेम करना ही अमर होने के बराबर है। हे! अप्सरा। तुम्हारा नृत्य सुन्दर है।

विशेषताएँ

1. भाषा - खड़ी बोली
2. शब्द - तत्सम
3. शैली - काव्य
4. शब्द गुण - व्यंजना
5. रस - शांतरस
6. छंद - अलंकार
7. अलंकार - रूपक
8. शब्दशक्ति - ~~व्यंजना~~ ओज

—x— END

Scanned by CamScanner